अनुग्रह से उद्धार

(2:8-10)

बैठकर बिलों का भुगतान करने के लिए चैक काटना मेरा नापसन्द काम है। मैं अज़्सर तब तक चैक भरने के लिए टालता रहता हूं, जब तक वे एक इंच के लगभग ऊंचे न हो जाएं। फिर मुझे पता होता कि अब यह काम करना था।

बीमे की किस्त मुझे हर महीने भरनी होती है। कई बार मैं पन्द्रह तारीख तक चैक नहीं भेज पाता। कभी-कभी कंपनी का नोटिस न आने तक मुझे किस्त चुकाना याद नहीं होता। परन्तु फिर भी कज़्पनी मेरा बीमा बन्द नहीं करती। कंपनी मुझे कुछ समय देती है जिसे ''तीस दिन का ग्रेस पीरियड'' कहा जाता है। ग्रेस पीरियड में मुझे बीमित ही मानती है, चाहे मैंने किस्त भी जमा नहीं कराई होती।

ज़्या मैं इस ग्रेस पीरियड का हकदार हूं? नहीं, मैंने तो किस्त जमा नहीं कराई। फिर भी मुझे इतना समय दिया जाता है। सचमुच मुझे वह मिलता है जिसका मैं हकदार नहीं हूं।

''ग्रेस'' अर्थात अनुग्रह बाइबल के मुज़्य शज़्दों में से एक है। इसके मूल इब्रानी शज़्द में झुकने का विचार मिलता है। अन्ततः इसमें ''कृपालु उपकार'' या किसी को अनापेक्षित समर्थन दिखाने का विचार शामिल किया गया है। उदारता के कारण, राजा द्वारा किसी सेवक पर दया करने के लिए उसके मार्ग से हटने पर विचार करें।

बाइबल में जब भी मनुष्यों के लिए परमेश्वर के अनुग्रह की बात होती है, तो इस कार्य की उस प्रकृति पर ज़ोर दिया जाता है, जिसमें मनुष्य इसके योग्य न हो। परमेश्वर हम पर अपनी करुणा केवल अपने प्रेम तथा रुचि के कारण दिखाता है न कि हमारा कर्ज़दार होने के कारण। अनुग्रह एक ऐसी चीज़ है, जिसे परमेश्वर अपनी इच्छा से देना चुनता है, न कि हमारा देनदार होने के कारण।

ज़्या आपको मालूम है कि यीशु द्वारा विशेष तौर पर ''अनुग्रह'' शज़्द के इस्तेमाल का कोई उल्लेख पवित्र शास्त्र में नहीं है? परन्तु उसके कामों से संकेत मिलता है कि वह अनुग्रह का अर्थ पूरी तरह से जानता था। अनुग्रह यीशु में से पूरे बहाव से निकला। यह काना में विवाह के समय, सामरिया के कुएं के पास और उस घर में बहा जहां यीशु ने उस आदमी को जिसे छत में से नीचे उतारा गया था चंगा किया था। यीशु ने चुंगी लेने वाले जज़्कई पर, उसका वस्त्र छूने के लिए आने वाली स्त्री पर और व्यभिचार में पकड़ी गई स्त्री पर अनुग्रह दिखाया।

क्रूस पर विशेष रूप से अनुग्रह दिखाया गया। पवित्र शास्त्र पढ़ते हुए, गुलगता में हम क्रूस पर मर रहे डाकू से मिलते हैं जो पुकार उठा था, ''हे यीशु, जब तू अपने राज्य में आए,

तो मेरी सुधि लेना'' (लूका 23:42)। यह डाकू यीशु के बारे में केवल इतना ही जानता था। वह अपनी निराशाजनक स्थिति को समझता था। उसे इस बात का अहसास था कि यदि यीशु वही था, जिसका दावा कुछ लोग करते थे तो वह उसके जीवन में अन्तर ला सकता है। इससे समझ में आता है कि डाकू ने दया की भीख ज़्यों मांगी। उसने उस अनुग्रह की इच्छा की जो केवल यीशु ही दे सकता है।

डाकू तथा यीशु के बीच के इस क्षण को एक लेखक ने इस प्रकार शब्दों में ढालने की कोशिश की:

> बताओ, इस आदमी ने ऐसा ज़्या किया था जिसके लिए वह मदद मांग रहा था? उसने अपना जीवन बर्बाद किया था। वह किससे क्षमा मांगता है? उसने सार्वजनिक तौर पर यीशु का मज़ाक उड़ाया। उसे यह प्रार्थना करने का ज़्या अधिकार है?
>
> ज़्या तुम सचमुच जानना चाहते हो? उसे वही अधिकार है जो तुज़्हें प्रार्थना करने का है।
>
> देखो, उस क्रूस पर तुम और मैं चढ़े हुए हैं। नंगे, उदास, आशाहीन और बेगाने। वह हम ही हैं। उस डाकू के रूप में हम ही पूछ रहे हैं, ''मेरे कर्मों के बावजूद, मेरी इस दशा के बावजूद ज़्या कोई ऐसा तरीका है कि जब हम सब घर पहुंचें तो आप मुझे याद रखें?''
>
> हम घमण्ड नहीं करते। ...
>
> हम जानते हैं कि हम इसके हकदार नहीं हैं। परन्तु निराशा के कारण हम यह दुस्साहस करते हैं और बिनती करते हैं।[1]

2:8-10 में पौलुस की बात का सार अनुग्रह से उद्धार ही है:

> ज़्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुज़्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुज़्हारी ओर से नहीं, वरन परमेश्वर का दान है। और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे। ज़्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं; और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिए सृजे गए जिन्हें परमेश्वर ने पहिले से हमारे करने के लिए तैयार किया (2:8-10)।

इस पद से अनुग्रह के द्वारा उद्धार की पुष्टि हो जाती है। यह पद हम से कहता है: *उस अनुग्रह के लिए महिमा केवल परमेश्वर ही की है जिससे हमारा उद्धार सज़्भव होता है।* 2:8-10 का मूल सत्य यही है।

हमारे उद्धार से परमेश्वर के अनुग्रह की महानता का पता चलता है

आयत 8 पढ़ें, ''ज़्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुज़्हारा उद्धार हुआ है,'' और तीन मुज़्य शब्दों पर ध्यान दें। पहला शब्द ''अनुग्रह'' (यू.: *charis*) संज्ञा है। अनुग्रह किसी के लिए परमेश्वर का वह कार्य है, जिसके वह योग्य नहीं है। हम उद्धार को किसी प्रकार कमाते नहीं हैं। जो कुछ हम हैं और जो कुछ हम करते हैं, उससे कभी भी हम इस

स्थिति में नहीं आ सकते कि परमेश्वर हमें अपने साथ अनन्त जीवन देने का देनदार हो जाए। कोई शुभ कर्म, कोई धार्मिक रीति, प्रभु के नाम में की गई कोई सेवा हमारे उद्धार के लिए परमेश्वर के पूर्वप्रबन्ध को नहीं बना सकती थी।

हम इस विचार को समझ ही सकते हैं कि परमेश्वर हम से प्रेम करता है, अनुग्रह से हमारा उद्धार करना चाहता है और हमें अपने साथ स्वर्ग में अनन्त जीवन देने का इच्छुक है, चाहे हमने उसके विरुद्ध पाप ही किया है। परमेश्वर के अद्‌भुत अनुग्रह का स्थान कोई नहीं ले सकता!

आयत 8 में दूसरा मुख्य शब्द ''उद्धार'' (यू.: *sozo*) है। क्रिया कर्मवाच्य है। हम अपना उद्धार स्वयं नहीं करते। हमारा उद्धार परमेश्वर करता है। परमेश्वर हमारी ओर से काम करता है। हमारा उद्धार हमारे जीवनों में परमेश्वर के कार्य को प्रमाणित करता है।

मूल शब्द ''उद्धार'' में ''बचाए जाने, छुड़ाए जाने'' का भाव मिलता है। परमेश्वर का अनुग्रह हमें बचाता है। अध्याय 2 के संदर्भ में, हम इस भागीदारी को देख सकते हैं। अपने जीवन में परमेश्वर के अनुग्रह से पहले, हम मरे हुए थे, अर्थात पूरी तरह से परमेश्वर से कटे हुए (2:1), शैतान के वश में (2:2) और परमेश्वर के न्याय का सामना करने वाले पापियों के रूप में विनाश की ओर जा रहे थे (2:3)।

परमेश्वर के अनुग्रह ने हमें छुड़ाया। उसका अनुग्रह हमें मृत्यु से जीवन में लाया। उसके अनुग्रह ने हमें शैतान के वश से छुड़ाया। उसके अनुग्रह ने हमें न्याय के समय दण्ड पाने वाले पापियों के रूप में परमेश्वर के सामने खड़ा होने से बचाया है। अनुग्रह ही से, हमारा उद्धार हुआ है।

आयत 8 में तीसरा मुख्य शब्द ''विश्वास'' (यू.: *pistis*) है। हम तक आने वाला उद्धार हमारे विश्वास के माध्यम से अनुग्रह के द्वारा आता है। हमारा उद्धार की परमेश्वर की अनुग्रहकारी पेशकश को पाने के लिए विश्वास करना आवश्यक है। परमेश्वर हमसे परमेश्वर की बातों व प्रतिज्ञाओं पर भरोसा करने और उन्हें मानने की अपेक्षा करता है, परन्तु हमारा कार्यकारी विश्वास किसी भी प्रकार उद्धार को कमाने के रूप में नहीं माना जाना चाहिए।

कॉलेज में लिए जाने वाले कई कोर्सों के लिए मैं अपने प्रोफेसर के साथ अनुबंध कर लेता था। ''बी'' ग्रेड लेने के लिए मुझे यह, यह और यह करना होता था। ''ए'' ग्रेड लेने के लिए मुझे यह, यह और यह करना आवश्यक था। सेमेस्टर के अंत में, यदि मैंने ''ए'' ग्रेड लेने के लिए अनुबंध किया होता, और ''ए'' लेने की सारी शर्तों को पूरा कर देता, तो ''ए'' पाना मेरा अधिकार होना था। इस प्रकार प्रोफेसर ''ए'' ग्रेड देकर मुझ पर कोई अहसान नहीं कर रहा होता। या ''ए'' ग्रेड देकर वह मुझ पर कोई अनुग्रह नहीं करता था। यदि मैंने कर्म किया हो, तो मुझे वह ग्रेड देना प्रोफेसर के लिए आवश्यक था। अनुबंध ऐसे ही था।

उद्धार के विषय में बात करने पर बिल्कुल उलट होता है। कृपया उद्धार के लिए आवश्यक बातों को जिन्हें ''उद्धार के पग'' कहा जाता है अर्थात सुनने, विश्वास करने, मन फिराने और बपतिस्मा लेने को परमेश्वर के साथ अनुबंध से न उलझाएं। यह न सोचें ''यदि

मैं ये बातें करता हूं, तो मुझे उद्धार पाने का अधिकार मिल जाता है।'' पापी होने के कारण हम सदा के लिए परमेश्वर के सामने से काटे जाने के हकदार हैं। वह हमें उद्धार देने की पेशकश केवल अपने अनुग्रह के कारण करता है।

उसके वचन की खोज करके हम परमेश्वर में भरोसा दिखाते हैं। जब हम अपने आप को इसके प्रति समर्पित कर देते हैं और जब उन कामों से मन फिराकर मुड़ जाते हैं, जो परमेश्वर को पसन्द नहीं हैं तथा जब हम यीशु को उद्धारकर्ज़ा मानकर क्षमा के लिए बपतिस्मा लेते हैं तो हम परमेश्वर में भरोसा दिखाते हैं। मेरे लिए, आपके लिए या किसी के लिए भी इनमें से किसी कार्य से उद्धार कमाया नहीं जा सकता। पापी लोग उद्धार कमा नहीं सकते। यह केवल परमेश्वर के अनुग्रह से मिलता है। हमारे उद्धार से परमेश्वर के अनुग्रह की महानता का पता चलता है।

हमारे उद्धार से परमेश्वर के अनुग्रह के दान का पता चलता है

2:8, 9 पढ़ें: ''ज़्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से हमारा उद्धार हुआ है, और यह तुज़्हारी ओर से नहीं, वरन परमेश्वर का दान है। और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे।'' पौलुस ने दो अतिरिज़्त कथनों से अनुग्रह से उद्धार होने की पुष्टि भी की। दोनों ही इस बात को रेखांकित करते हैं कि परमेश्वर का अनुग्रह दान कैसे है। उसने साफ कहा, ''हमने अनुग्रह अपने आप नहीं पाया है। परमेश्वर ने हमें दिया है। उद्धार हमारी ओर से किया जाने वाला कोई कार्य नहीं है। यह पूरी तरह से परमेश्वर का दान है।''

फिर, पौलुस ने दोबारा ज़ोर दिया कि हमारा उद्धार हमारे कर्मों के आधार पर नहीं हुआ है। यह कोई पुरस्कार नहीं है जो हमें अपनी ओर से की गई किसी शानदार प्राप्ति के लिए मिला हो। परमेश्वर की स्वीकृति पाने के लिए कर्मों से किसी तरह उद्धार नहीं पाया जा सकता। पौलुस ने ''अपने आप उद्धार पाने की हर सज़्भावना'' को खारिज कर दिया।[2]

कैंट ह्यूगस ने एक प्राचीन मध्यपूर्व की कहानी बताई, जिससे कर्मों से उद्धार की निरर्थकता का पता चलता है।

> ... एक आदमी अपने गधे पर जा रहा था कि रास्ते में उसे लगा कि नीचे कोई छोटी सी वस्तु पड़ी है। वह उस वस्तु को निकट से देखने के लिए नीचे उतरा और देखा कि एक छोटी चिड़िया अपनी दुबली-पतली टांगें आकाश की ओर करके लेटी हुई है। पहले तो उसे लगा कि यह पक्षी मरा हुआ है, परन्तु निकट से देखने पर पता चला कि वह जीवित थी। आदमी ने उस चिड़िया से पूछा कि वह ठीक तो है? चिड़िया ने उज़र दिया, ''हां।'' आदमी ने कहा, ''टांगें आकाश की ओर ऊपर और पीठ नीचे करके तुम यह ज़्या कर रही हो?'' चिड़िया का उज़र था कि उसने उड़ती-उड़ती खबर सुनी है कि आकाश गिरने वाला है, इसलिए उसे सहारा देने के लिए उसने अपनी टांगें ऊपर की ओर कर ली हैं। आदमी ने उज़र दिया, ''तुज़्हें सचमुच लगता है कि तुम इन दुबली-पतली टांगों से आकाश को सज़्भाल पाओगी?'' चिड़िया ने, बड़े गंभीर होकर उसकी ओर देखा और मुंह

तोड़ जवाब दिया, ''जितना कोई कर सकता है करता है।'' उस नन्हें पक्षी की आत्मव्यंजना और व्यर्थ कर्म बिल्कुल स्पष्ट थे।

इसी प्रकार मनुष्य की स्थिति इतनी निराशाजनक है कि उसके कर्म हवा में उस पक्षी की टांगों की तरह या किसी लाश को सजाने की तरह किसी काम के नहीं हैं। किसी का भी उद्धार उसके कर्मों से नहीं होगा।[3]

मित्र, इस कहानी से पता चलता है कि उद्धार पाए हुए किसी व्यज़्ति के लिए घमण्ड से फूलना और किसी दूसरे की ओर देखकर यह सोचना कि, ''मैं उससे धर्मी हूं। मैं उससे अच्छा या अच्छी हूं। मैं अच्छी मां या पिता हूं। मैं अधिक सदाचारी हूं। मैं मसीह को अच्छी तरह मानता या मानती हूं। मैं दूसरों से बढ़िया मसीही हूं'' हास्यास्पद ज़्यों है।

ऐसा आत्मिक घमण्ड हमारे मनों में आ सकता है, परन्तु इससे केवल परमेश्वर के अनुग्रह को न समझने का पता चलता है। मसीह के क्रूस के आगे हम सब बराबर हैं। हमारी आशा हमारी धार्मिकता नहीं, न हमारे अच्छे कर्म हैं, न यह कि हम कितने अच्छे माता-पिता या संतान हैं, न ही यह कि हम कितने सदाचारी हैं। हमारी एक मात्र आशा परमेश्वर का अनुग्रहकारी दान अर्थात यीशु मसीह है। जिस कारण हम में से किसी को भी दूसरे लोगों से बढ़कर अपने आप को अधिक आत्मिक मानना या घमण्ड करने का कोई कारण नहीं है। हम में से किसी को भी उन में से, जो निर्बल लगते हैं, अपने आप को निकालने का अधिकार नहीं है। हमें उनकी निर्बलता में उनकी सहायता करके अपनी निर्बलताओं को दूर करने की इच्छा करनी चाहिए।

हमें परमेश्वर के अनुग्रह के दान में आनन्दित रहने व दूसरों से इतना प्रेम करने के लिए बुलाया गया है कि वे उसके अनुग्रह को जानें और हम साथी मसीहियों से प्रेम करें। हमें भाइयों से प्रेम करना चाहिए चाहे वे कितने भी बुरे ज़्यों न हों, ज़्योंकि हम परमेश्वर के अनुग्रह के उसी दान को बांटते हैं।

हमारा उद्धार परमेश्वर के अनुग्रह की रचनात्मकता को बढ़ाता है

पौलुस ने आगे कहा, ''ज़्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं; और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिए सृजे गए, जिन्हें परमेश्वर ने पहले से हमारे करने के लिए तैयार किया'' (2:10)। ध्यान दें कि हम ज़्या हैं: परमेश्वर ''के बनाए हुए।'' ''उसके बनाए हुए'' के लिए यूनानी शज़्द *poiema* है, जिससे हमें कविता के लिए अंग्रेज़ी शज़्द ''poem'' मिला है। इसका अर्थ ''कला का उत्कृष्ट कार्य'' है। मसीह में, आपको परमेश्वर का अनुग्रह मिलता है और आप उसकी कलाकृति बन जाते हैं।

मिचलेंजलो के चित्र व मूर्तियों से उसकी सृजनात्मक बुद्धि का पता चलता है। शेज़्सपीयर के नाटकों से हमें उस अच्छे लेखक का ध्यान आता है। मोज़ार्ट के संगीत में शानदार धुन का ईश्वरीय गुण दिखाई देता है।

पौलुस कह रहा था, ''हे ज़ाइयो, अपने इर्द-गिर्द देखो। अपनी स्थानीय कलीसिया के लोगों को देखो। उनके जीवनों में परमेश्वर द्वारा किया गया परिवर्तन देखो। हर व्यज़्ति

परमेश्वर की बुद्धि की सृजनात्मकता की गवाही देता है। उसने बिगड़े हुए, टूटे-फूटे, निराश, भटके हुए लोगों को कला कृतियां बना दिया है।''

हम परमेश्वर के हाथों की कारीगरी हैं। नौजवान मसीही परमेश्वर की कविताएं हैं, जो उसके अनुग्रह, दया और प्रेम को दूसरों तक पहुंचाते हैं। कलीसिया की स्त्रियां परमेश्वर की बनाई हुई तस्वीरें हैं, जिन्हें जीवन की सुगंधि से दैनिक जीवन के कैनवस पर बनाया गया है। पुरुष मसीह की बात ऐसे मानते हैं जैसे वे स्वयं यीशु को दिखाने के लिए परमेश्वर की कृति के रूप में परमेश्वर द्वारा बनाए जा रहे हों। आराधना के लिए इकट्ठे होने पर मसीही लोग परमेश्वर की महिमा की उस शान का संदेश देते हैं जिसने हमारा उद्धार किया।

हम परमेश्वर की कारीगरी हैं। ज़्यों? आयत का दूसरा भाग देखें: ''...मसीह यीशु ने ... *भले कामों के लिए* सृजे गए।'' हम में से हर एक का उद्धार सेवा करने के लिए हुआ है। आप कभी भी इतने छोटे नहीं होंगे कि भले कार्य न कर सकें और भले कार्यों को करते रहने के लिए रिटायर होने की भी कोई उम्र नहीं है। यीशु ने कहा, ''उसी प्रकार तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के सामने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में है, बड़ाई करें'' (मत्ती 5:16)।

भले कार्य कलीसिया की सज़्पज़ि होने के लिए नहीं थे। भले कार्यों का अर्थ घर में किसी ज़ाई या बहन के साथ इस्तेमाल किए जाने वाले शब्दों के स्वर और लहज़े, अपने नियोज़्ता के लिए किए जाने वाले काम की गुणवज़ा, करियाने की दुकान पर काम करने वाली लड़की से दिखाया गया धीरज और अपना बोझ हल्का करने के लिए आपके साथ बात करने वाले को दिया जाने वाला आपका उत्साह है।

भले कार्यों का सज़्बन्ध हमारे जीवन तथा जीवन के ढंग से है।

सारांश

अपनी पुस्तक *द रैगमॅफ़िन गॉस्पल* में, ब्रेनन मैनिंग ने एक डॉज़्टर की कहानी दी है:

> मैं उस बिस्तर के पास खड़ा हूं जहां एक युवती लेटी हुई है, उसके चेहरे का ऑपरेशन हुआ है, उसका मुंह टेड़ा हो चुका है, जो मसखरे जैसा लगता है। उसके चेहरे की कोई छोटी सी नाड़ी, उसके मुंह की मांसपेशियों में जाने वाली कोई नाड़ी खराब हो गई थी। अब वह ठीक नहीं हो सकती। मैं आपको बताता हूं कि डॉज़्टर ने उसके मांस की गोलाई बड़े धार्मिक जोश से बनाई तो भी उसकी गाल से गिल्टी निकालने के लिए, मुझे छोटी सी नस काटनी पड़ी।
>
> उसका जवान पति कमरे में है। वह उसके बिस्तर के सामने खड़ा है और लगता है कि वे मुझसे अलग, अकेले ही दीये की रोशनी में रहेंगे। मैं अपने आप से पूछता हूं, वे कौन हैं, वह आदमी और मेरा बनाया हुआ यह विकृत चेहरा, जो मेरी ओर घूरते हुए एक दूसरे को इतनी दयालुता, लालसा से स्पर्श कर रहे हैं? युवती बात करती है।
>
> ''ज़्या मेरा चेहरा ऐसा ही रहेगा?'' वह पूछती है।

''हां, ऐसा ही रहेगा। नस जो कटी है,'' मैं कहता हूं।

वह सिर हिलाती है और चुप है। परन्तु आदमी मुस्कराता है।

''मुझे अच्छा लगता है, सुन्दर लगता है।'' वह कहता है।

तभी मुझे पता *चलता है* कि वह कौन है। मुझे समझ आ जाती है और मैं नज़र झुका लेता हूं। किसी ईश्वर का सामना करना आसान नहीं है। बिना किसी की परवाह किए वह उसके टेढ़े हुए मुंह पर चुम्बन करता है और मैं पास खड़ा देख सकता हूं कि वह किस प्रकार उसे यह दिखाने के लिए कि उनका चुम्बन अभी भी काम करता है, अपने होंठों को उसके होंठों से लगाता है।[4]

क्रूस को स्मरण करें। गुलगता को याद करें। याद करें कि परमेश्वर अर्थात मनुष्य के रूप में परमेश्वर वहां था। परमेश्वर को तोड़ा मरोड़ा गया, मारा गया और उसका लहू बहाया गया। परमेश्वर, यीशु में, होकर हमारे मैले-कुचैले भले कार्यों के बजाय अपने अनुग्रह के आधार पर हमसे व्यवहार करते हुए, हमें जगह देने के लिए पुकार रहा था, हमें उसके होंठ हिलते तो दिखाई दे रहे थे, पर उसकी आवाज़ नहीं सुन रही थी।

परमेश्वर के अनुग्रह की वास्तविकता पर एक क्षण के लिए अपना हृदय खोलें। ज़्या आपके विश्वास ने परमेश्वर के अनुग्रह को आपके जीवन में आने का मार्ग दिया है? ज़्या आपने उद्धार को कमाने के लिए नहीं बल्कि यह दृढ़ विश्वास व्यक्त करने के लिए कि यीशु ही आपकी एकमात्र आशा है, बपतिस्मा लिया है?

ज़्या परमेश्वर के अनुग्रह पर विचार से आपका घमण्ड टूटा है? शायद आपने अपने आप को आधार पर रख दिया है। आप अपने आप को भलाई तथा धार्मिकता में दूसरों से कम देखने लगे हैं। ज़्या परमेश्वर के अनुग्रह को याद करके आप फिर से यह देख सकते हैं कि हम सब को परमेश्वर की बहुत आवश्यकता है? परमेश्वर के अनुग्रह पर विचार करते हुए ज़्या आप उससे मांग सकते हैं कि वह आपकी इतना आलोचनात्मक और घमण्डी न होने में सहायता करे?

ज़्या परमेश्वर का अनुग्रह आपको भले कार्यों के महत्व और उद्देश्य को देखने में उत्साहित करता है? भले कार्यों से हम कुछ भी कमा नहीं सकते। उनसे हमें केवल परमेश्वर के उस सारे अनुग्रह के लिए, ''हे परमेश्वर, तेरा धन्यवाद हो'' कहने का अच्छा ढंग मिल जाता है।

टिप्पणियां

[1]मैज़्स लुकैडो, *ही स्टिल मूव्ज़ स्टोन्ज़* (डैलस: वर्ड पज़्लिशिंग, 1993), 196. [2]ए. स्केविंग्टन वुड, *इफिसियंस,* द एज़्सपोज़िटर'स बाइबल कमैन्ट्री विद द न्यू इन्टरनेशनल वर्ज़न ऑफ द होली बाइबल, सामा. संस्क. फ्रैंक ई. गेयबलेन (ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगन.: ज़ॉन्डरवन पज़्लिशिंग हाउस, 1978), 36. [3]कैंट ह्यूगस, *इफिसियंस: द मिस्ट्री ऑफ़ द बॉडी ऑफ़ क्राइस्ट* (व्हीटन, इलिनोइस: क्रॉसवे बुज़्स, 1990), 84. [4]ब्रैनन मैनिंग, *द रैगमॉफ़िन गॉस्पल: एज़्प्रेसिंग द अनकंडिशनल लव ऑफ़ गॉड* (सिस्टर्स, ओरिगन: मल्टनोमाह बुज़्स, 1990), 105-6.